दृष्टि
The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-IX (प्रश्नपत्र-1)

DTVF/18(JS)-HL-**HL9**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Devendra Prakash Meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ______

ई-मेल पता (E-mail address): ______

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): T-9 8 11/09/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

1	1	1	3	4	4	8

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): DPmeena

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______ टिप्पणी (Remarks): ______

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियों,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमज़ोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - सँक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम ज़रूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेज़ों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमज़ोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: $10 \times 5 = 50$

(क) नाथ साहित्य में खड़ी बोली हिंदी का प्रारंभिक स्वरूप

नाथों द्वारा अपनी धार्मिक - मान्यताओं के प्रचार - प्रसार के लिए जिस साहित्य की रचना की गई, उसे नाथ साहित्य कहा जाता है।

चूंकि नाथ साहित्य के समय ही हिन्दी का विकास आरंभ हुआ था। अत: इसमें खड़ी बोली के आरंभिक लक्षण दिखाई देते हैं। नाथ साहित्य में खड़ी बोली का स्वरूप निम्न उदाहरण में द्रष्टव्य है -

"जाणि के अजाणि होय, बात तू लै पछाणि।
चेले हो द्वारा लाभ होएगा, गुरु होयगो आणि।"

उपर्युक्त उदाहरण में 'न' को 'ण' में परिवर्तित करने की प्रवृत्ति खड़ी बोली का ही लक्षण प्रस्तुत करती है।

नाथ साहित्य में कई स्थानों पर प्रयुक्त हिन्दी वर्तमान में प्रयुक्त मानक हिन्दी के समान ही प्रतीत होती है। उदाहरण के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लिए -

" नौ लख पातरि आगे नाचे,
पीछे सहज अखाड़ा।
ऐसो मन ले जोगी खेलै,
तब अंतरि बसै भंडारा।"

उपर्युक्त उदाहरण में खड़ी बोली में प्रयुक्त विशेषण 'नौ' का प्रयोग हुआ है। साथ ही शब्द संरचना भी वर्तमान खड़ी बोली के समान है।

इसी तरह एक अन्य उदाहरण में मछंदरनाथ कहते हैं -

" जोगी सोई जाणिये, जग ते रहत उदास,
तत निरंजन पाइये, कहै मछंदरनाथ।"

सारांशतः कहा जा सकता है कि नाथ साहित्य में खड़ी बोली के आरंभिक लक्षण प्रस्तुत होते हैं, जो धीरे-धीरे संत साहित्य में ~~अस्पष्ट~~ मूल स्वरूप धारण करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में डा. रघुवीर का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spa

किसी भी भाषा के आधुनिकरण के लिए आवश्यक है कि वर्तमान संदर्भ में उपयुक्त होने के लिए उसकी वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली का विकास हो। हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली के विकास में डा रघुवीर सहाय का योगदान अतुलनीय है।

डॉ रघुवीर सहाय परम्परावादी दृष्टिकोण के अनुयायी थे। उनके अनुसार हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली का विकास संस्कृत की शब्दावली से किया जाना चाहिए। संस्कृत से निर्मित शब्दों के संदर्भ में उनका मानना था कि इससे एक ही धातु से अनेक शब्दों की रचना संभव है। उदाहरण के लिए -

Law के लिए 'विधि' का उपयोग करना विधि, वैध, अवैध, विधायक आदि को निर्मित कर सकता है।

उनका मानना था कि पारिभाषिक शब्द

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

संक्षिप्त तथा सारगर्भित होना चाहिए। जैसे -

Hunger strike - अनशन

Calculus - कलन

डॉ रघुवीर ~~संस्कृत~~ का महत्वपूर्ण योगदान लैटिन अमेरिकी शब्दों के अनुवाद से संबंधित है. उनका मानना था कि लैटिन भाषाएँ भी संस्कृत से ही प्रभावित है। अतः इन्हें सीधे तौर पर अनुवादित किया जा सकता है।

जैसे -

Pericentral - परिकेन्द्र

हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली में डॉ रघुवीर ने पाँच ग्रंथों की रचना की। उनमें प्रमुख है- सांख्यिकी कोश, अंक विज्ञान कोश आदि।

सारांशतः कहा जा सकता है कि डॉ रघुवीर ने हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) राष्ट्रभाषा और राजभाषा में अंतर

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spac

किसी भी राष्ट्र के लिए वहाँ की आम जनता द्वारा बोली जाने वाली भाषा तथा राजकीय कार्यों में प्रयुक्त भाषा समान अथवा असमान हो सकती है।

राष्ट्रभाषा से तात्पर्य उस राष्ट्र की आम जनता द्वारा व्यवहार में प्रयुक्त की जाने वाली भाषा से है जबकि राजभाषा से तात्पर्य संविधान द्वारा राजकीय क्रियाकलापों, न्यायिक तथा प्रशासनिक कार्य में प्रयुक्त भाषा से है।

राजभाषा तथा राष्ट्रभाषा

→ राजभाषा किसी राष्ट्र के ~~प्रशा~~ प्रशासनिक व्यवहार को प्रकट करती है तो ~~राष्ट्र~~ राष्ट्रभाषा लोक व्यवहार को।

→ राजभाषा की शब्दावली औपचारिक होती है जबकि राष्ट्रभाषा की शब्दावली व्यवहारिक तथा अनौपचारिक भी हो सकती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

राष्ट्रभाषा किसी राष्ट्र के साहित्य का ~~[illegible]~~ प्रतिबिम्ब होती है, जबकि राजभाषा प्रशासन का।

- राजभाषा के कोई भी कानून अधिनियम या लिखा जाता है, जबकि राष्ट्रभाषा के कानून नीचे से (जनता से) प्रारंभ होता है।

- राष्ट्रभाषा उस देश की स्वदेशी भाषा होती है जबकि राजभाषा विदेशी भाषा भी हो सकती है। उदाहरण के लिए ब्रिटिश काल में अंग्रेजी राजभाषा थी जबकि हिन्दुस्तानी राष्ट्रभाषा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) 'अवधी' बोली

'अवधी' बोली पूर्वी हिन्दी उपभाषा की महत्वपूर्ण बोली है, जिसका विकास अर्द्धमागधी अपभ्रंश से माना जाता है।

'अवधी' मुख्यत: अवध प्रदेश जिसमें लखनऊ, फैजाबाद जैसे जिले सम्मिलित है, उसमें बोली जाती है।

अवधी बोली की साहित्यिक परम्परा बहुत ही उज्ज्वल रही है। मध्यकाल में सूफी प्रेमाश्रयी काव्यधारा तथा रामभक्ति काव्यधारा के रूप में इसका साहित्यिक भाषा के रूप मे पर्याप्त विकास हुआ।

जायसी, मुल्ला दाउद जैसे कवियों ने अवधी के ठेठपन को माधुर्य से युक्त किया। जैसे-

"यह तन जारौं छार कै, कहौं कि पवन उड़ाव,
मकु तेहि मारग उड़ि परै, कंत धरै जहँ पाव।"

वहीं तुलसी ने अवधी के माधुर्य की पहुँच संस्कृत के विशाल चाशनी के अंतर्गत

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तक की।

" लोचन जल रहे लोचन कोना।
जैसे, परम कृपण कर सोना।"

अवधी के इसी माधुर्य की प्रशंसा आचार्य शुक्ल ने भी की है। अवधी की भाषायी विशेषता निम्नलिखित है-

→ अवधी में 'ड़' का 'र', 'व' का 'ब' तथा 'ण' का 'न' के रूप में उच्चारण होता है।

वन > बन
बाण > बान
साड़ी > सारी

→ अवधी में 'ऐ' तथा 'औ' का उच्चारण 'अइ' तथा ~~औ~~ 'अउ' के रूप में होता है।

पैसा - पइसा
औरत - अउरत

→ अवधी उकारान्त बोली है।
जैसे- रामु, मातु आदि।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) भाषा और बोली में अंतर

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भाषा तथा बोली सामान्यतः एक ही अर्थ में प्रयुक्त होते है किन्तु बोली का विकसित रूप ही भाषा है।

जब बोली व्याकरणिक ढाँचे पर आरूढ़ होकर परिनिष्ठित रूप धारण कर लेती है, तो भाषा का विकास होता है।

भाषा तथा बोली में अन्तर स्पष्ट करने के लिए कुछ तथ्यों का सहारा लिया जा सकता है-

→ बोली का कोई मानक रूप नहीं होता जबकि भाषा का मानक रूप उपस्थित होता है।

— बोली एक क्षेत्र विशेष से संबंधित होती है जबकि भाषा का भौगोलिक विस्तार अधिक होता है।

→ बोली सामान्यतः लिपिविहीन होती है जबकि भाषा लिपिबद्ध होती है।

→ बोली के शब्द प्रायः अनौपचारिक होते है जबकि भाषा में शब्द औपचारिकता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ग्रहण कर लेते हैं।

किन्तु भाषा तथा बोली में अन्तर इतना स्पष्ट नहीं है क्योंकि साहित्यिक आधार मिलने पर बोली भी भाषा का रूप धारण कर लेती है। जैसे- तत्पश्चात में अवधी तथा ब्रजभाषा का विकास, जबकि आधुनिक काल में खड़ी बोली का विकास।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि बोली का व्याकरणिक रूप ही भाषा है तथा यही इनमें प्रमुख अन्तर है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में ब्रजभाषा के विकास पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~मध्यकाल में साहित्यिक~~

ब्रजभाषा पश्चिमी हिन्दी उपभाषा की महत्वपूर्ण बोली है, जिसका प्रयत्न क्षेत्र ब्रजमंडल है। इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से माना जाता है।

मध्यकाल में ब्रजभाषा अपने क्षेत्रीय रूप को त्यागकर अखिल भारतीय स्तर पर साहित्यिक रूप धारण करती है। इसका श्रेय कृष्णभक्ति काव्यधारा के कवि सूरदास को जाता है।

शुक्ल जी के शब्दों में - " सूर के यहाँ प्रपुक्त ब्रजभाषा किसी पूर्व परम्परा जो भले ही व्यवहार में प्रचलित हो का पूर्ण विकास जान पड़ता है।"

सूरदास ने ब्रजभाषा को शृंगार के तीनों पक्षों वात्सल्य, सख्य तथा दाम्पत्य से युक्त किया। उनकी शृंगारिकता ने ब्रजभाषा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को नवीन जीवन्तता से युक्त किया। उदाहरण द्रष्टव्य है -

" मैया कबहूँ बढ़ैगी चोटी
कितो बार मोहि दूध पियत भई,
यह अजहूँ है छोटी।"

सूरदास ने ब्रजभाषा को नवीन तत्वों से युक्त किया जिसमें वक्रता तथा वाग्विदग्धता प्रमुख है। सूर की गोपियाँ इसी वाग्विदग्धता के आधार पर सगुण ईश्वर को श्रेष्ठ सिद्ध करती है -

" निरगुण कौन देस को बासी,
को है जनक जननी को कहियत,
कौन नारि को दासि।"

सूरदास ने ब्रजभाषा को बिम्ब क्षमता से भी युक्त किया, इसी बिम्बात्मकता ने सूरसागर को सजीवता प्रदान की।

" सोभित कर नवनीत लिए,
घुटरूनि चलत रेनु तन मंडित
मुख दधि लेप किये।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सूर के हाथों पड़कर ब्रजभाषा ने स्वयं को शृंगारिकता से युक्त किया और यही गुण रीतिकाल में ब्रजभाषा को साहित्यिक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने में सफल हुआ।

बिहारी जैसे रीतिकालीन कवियों ने भाषा की समास क्षमता तथा भावों की संप्रेषण क्षमता का प्रदर्शन करते हुये ब्रजभाषा को गागर में सागर भरने वाली भाषा में परिवर्तित कर दिया। बिहारी का उदाहरण द्रष्टव्य है-

"कहत, नटत, रीझत, खिझत,
मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत है
नैननु ही सौं बात।"

बिहारी की इस अद्भुत क्षमता की प्रशंसा जार्ज ग्रियर्सन के द्वारा की गई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मध्यकाल में ब्रजभाषा केवल ब्रजमंडल तक ही सीमित नहीं रही अपितु यह अखिल भारतीय स्तर (उत्तर भारत) में साहित्यिक भाषा के रूप में अपनाई गई। एक कवि ने कहा भी है -

"ब्रजभाषा हेतु ब्रजवास ही न अनुमानौं,
ऐसे ऐसे कविन की बानी हू सौं जानिए।"

सारांशतः कहा जा सकता है कि ब्रजभाषा का मध्यकाल में विकास क्रम में सूरदास की भूमिका अतुलनीय है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) सर्वनाम का तात्पर्य स्पष्ट करते हुए सर्वनाम के विभिन्न भेदों पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

सर्वनाम वे पद है जो संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त है। जैसे - वह, तुम, हम आदि।

हिन्दी में सर्वनाम के छः भेद माने गये है -

① पुरुष वाचक सर्वनाम :- हिन्दी में तीन पुरुष माने जाते है।

उत्तम पुरुष - मैं, मेरा, मुझे, हम, हमारा

मध्यम पुरुष - तुम, तुम्हारा

अन्य पुरुष - वह, वे

② निजवाचक सर्वनाम - वह सर्वनाम पद जिसके द्वारा अपनत्व का बोध हो, उसे निजवाचक सर्वनाम कहते है। जैसे -

यह मेरी पुस्तक है।

③ निश्चयवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम पद से किसी निश्चितता का बोध होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अ. जैसे - यह पुस्तक

यह, वह आदि शब्द निश्चितता का बोध कराते है।

(4) ~~अनिश्चय~~

(4) अनिश्चयवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम पद से किसी अनिश्चितता का बोध होता हो, उसे अनिश्चय वाचक सर्वनाम कहते है।

जैसे - कोई है।

(5) संबंधबोधक सर्वनाम - वे सर्वनाम पद, जो संबंध प्रकट करते हैं। उदाहरण के लिए जो, वो आदि शब्द।

जैसे - जो पढ़ेगा, वह पास होगा।

(6) प्रश्नवाचक सर्वनाम - वे सर्वनाम पद जिनसे किसी प्रश्न पूछने का आग्रह हो अथवा प्रश्नबोध उपस्थित हो, प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते है।

जैसे - वह कहाँ गया ?

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी की सर्वनाम व्यवस्था एक व्यवस्थित ढाँचे को प्राप्त कर चुकी है किन्तु अभी भी बोलियों में कुछ विभेद उपस्थित है।

जैसे - ① पूर्वी हिन्दी मे एकवचन के लिए 'तुम' का प्रयोग होता है जबकि पश्चिमी हिन्दी में एकवचन के लिए 'तू' का प्रयोग।

~~पूर्वी हिन्दी में~~

② हिन्दी में 'तुम' का प्रयोग अभद्र माना जाता है, जिसके कारण 'आप' का प्रयोग किया जाता है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि हिन्दी की सर्वनाम व्यवस्था में उपस्थित वैज्ञानिकता हिन्दी की ~~एक~~ प्रमुख विशेषता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अपभ्रंश की व्याकरणिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये।

संस्कृत से हिन्दी के विकास के क्रम में मध्यकालीन आर्यभाषा की तीसरी अवस्था के रूप में अपभ्रंश का विकास हुआ।

अपभ्रंश से तात्पर्य ऐसी भाषा जिसके शब्दों का विकास संस्कृत के विकृत होने से हुआ है।

अपभ्रंश की व्याकरणिक विशेषताएं :-

① संज्ञा तथा कारक व्यवस्था :- अपभ्रंश में सभी सविभक्तिक प्रयोग प्रायः समाप्त होने लगे थे उनके स्थान पर निर्विभक्ति प्रयोग अथवा एक ही विभक्ति 'हि' का प्रयोग मिलता है। जैसे -

चरणोदक ले सिरहि चढ़ावा।

अपभ्रंश में सभी जातिवाचक स्वतंत्र होने लगे। जैसे - जगत्. > जग

संस्कृत की कारक व्यवस्था में आठ कारकों के स्थान पर केवल तीन कारकों का

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Found

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please don't write anything except the question number in this space)

प्रयोग होने लगा था। संबंध कारक के लिए 'का' का प्रयोग इस काल की उपलब्धि है।

(2) वचन व्यवस्था :- संस्कृत परम्परा के विपरीत अपभ्रंश में केवल दो ही वचन मिलते हैं। द्विवचन का लोप होने से अधिकांश द्विवचन शब्द बहुवचन में सम्मिलित हो गये।

(3) लिंग व्यवस्था - लिंग व्यवस्था भी संस्कृत के विपरीत केवल दो लिंगों स्त्रीलिंग तथा पुल्लिंग पर आधारित हो गई। नपुंसकलिंग के शब्दों को पुल्लिंग में सम्मिलित किया जाने लगा।

(4) काल व्यवस्था - अपभ्रंश में काल संरचना में व्यापक बदलाव आया। वर्तमान काल संस्कृत की 'तिङन्त' जबकि भूतकाल हिन्दी की 'कृदन्त' परम्परा से युक्त हुआ। भविष्यत् काल के लिए क्रिया के तीन नवीन रूप 'ह' रूप, 'स' रूप

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तथा 'व' रूप प्रयुक्त होने लगे।

जैसे - 'ह' रूप - चलिहिय
'स' रूप - चलिसई
'व' रूप - चलव

⑤ ~~कारक~~ विशेषण व्यवस्था - इस काल में कई विशेषणों सामान्यतः संख्यावाची विशेषणों जैसे- दस, बीस इगारह, आदि का विकास हुआ।

⑥ सर्वनाम व्यवस्था - सर्वनाम के रूप में 'तुम्हे' सर्वनाम का विकास इस भाषा की सबसे बड़ी देन है। इसके अतिरिक्त तुहार, तुम्हार, मुज, महार, ~~आ~~ उन्ह आदि सर्वनाम प्रयुक्त होते थे।

⑦ क्रिया व्यवस्था - इस काल में नवीन धातु रूपों का विकास हुआ। जैसे - उठ, बोलत आदि।

निष्कर्षतः हिन्दी की विकास परम्परा मे अपभ्रंश का महत्वपूर्ण योगदान है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4. (क) राजस्थानी हिंदी और उसकी बोलियों पर प्रकाश डालिये। 20

राजस्थानी हिन्दी राजस्थान सहित सिंध प्रदेश तथा मालवा जनपद तक विस्तृत है। इस ~~बोली~~ उपभाषा का विकास प्रकृताभास अपभ्रंश से माना जाता है। कुछ भाषा वैज्ञानिक 'डिंगल' भाषा से इसका संबंध जोड़ते हैं।

इस उपभाषा के अन्तर्गत चार बोलियाँ सम्मिलित हैं - ① ~~सम्मत~~ मारवाड़ी ② ढूंढाणी ③ मालवी ④ मेवाती

राजस्थानी हिन्दी की प्रमुख विशेषता इसकी 'ट' वर्ग बहुला होना है। 'ट' वर्ग की अधिकता के कारण यह ओजपूर्ण बोली है। इसमें संज्ञा पद प्रायः ओकारान्त होते हैं। जैसे - तारो। हुक्को आदि।

इस उपभाषा में 'ल' का रूपान्तरण 'ळ' तथा 'न' का रूपान्तरण 'ण' में हो जाता है। जैसे - बालक > बाळक

पानी > पाणी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मारवाड़ी → राजस्थानी हिन्दी की सर्वाधिक विकसित बोली है, जिसका भौगोलिक एवं साहित्यिक क्षेत्र विस्तृत है। इस बोली की प्रमुख विशेषता इसकी ओकारान्तता है। इसमें अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति पाई जाती है।

जैसे - हाथ > हात
भूख > भूक

राजस्थानी हिन्दी की प्रमुख विशेषता 'ण' का उच्चारण मारवाड़ी में अधिक प्रभावी है। जैसे - पाणी,

मारवाड़ी बोली में निम्नलिखित सर्वनाम प्रयुक्त किये जाते हैं -

उत्तम पुरुष - म्हारो, हमारो, म्हारी
मध्यम पुरुष - तोकूं, थारो, थांकी
अन्य पुरुष - वा, वे,

कारक व्यवस्था मे अधिकांश मानक हिन्दी की भाँति ही प्रयुक्त होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मारवाड़ी बोली में निम्नलिखित विशेषण प्रयुक्त होते हैं। जैसे- चोखा, आछी, घणो आदि।

मारवाड़ी का ~~प्रमुख~~ उदाहरण मीराबाई के काव्य में द्रष्टव्य है-

"हे री मैं तो दरद दीवाणी
मेरो दरद न जाणे कोय।"

② ढूँढाणी / जयपुरी - यह बोली जयपुर के आस-पास के क्षेत्र में बोली जाती है। इसकी प्रमुख विशेषता 'छै' का प्रयोग है। इस बोली का उदाहरण द्रष्टव्य है-

"म्हारी घूमर छै नखराळी ए मा
घूमर रमवा म्हे ज्यास्याँ।"

③ मेवाती - हरियाणा के मेवात क्षेत्र में बोली जाने वाली इस बोली पर राजस्थानी का प्रभाव दिखाई देता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

मालवी – राजस्थानी हिन्दी की इस बोली का प्रयोग मालवा अंचल में होता है। इस बोली में दीर्घीकरण की प्रवृत्ति पाई जाती है। जैसे

लकड़ी > लाकड़ी

कपड़ा > कापड़ा

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मानक हिंदी की वाक्य-संरचना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space

शब्दों के सार्थक संयोजन से बनी संरचना जिसका कोई सार्थक अर्थ विद्यमान हो वाक्य कहलाता है। जैसे -

→ वह पढ़ रहा है।

किसी भी भाषा के मानकीकरण की प्रक्रिया में वाक्य विन्यास का उपस्थित होना आवश्यक है। हिन्दी में 'कारक' व्यवस्था वाक्य में शब्द का स्थान निश्चित करती है।

मानक हिन्दी में तीन प्रकार की वाक्य संरचना विद्यमान है -

(क) सरल वाक्य

(ख) संयुक्त वाक्य

(ग) मिश्रित वाक्य

(क) सरल वाक्य - वे वाक्य जिनमें केवल एक उद्देश्य तथा एक विधेय हो, सरल वाक्य कहलाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

जैसे - राम ने खाना खाया।

इस वाक्य में केवल एक उद्देश्य एवं एक विधेय है।

② संयुक्त वाक्य - जब दो या दो से अधिक वाक्य आपस में संयोजित हो, तो संयुक्त वाक्य का विकास होता है। जैसे -

जैसे -

राम ने खाया खाया और सो गया।

③ मिश्रित वाक्य - जब किसी वाक्य में एक मुख्य वाक्य हो तथा उस पर आश्रित उपवाक्य हो, तो मिश्रित वाक्य कहलाता है।

जैसे -

"वह पढ़ रहा था किन्तु किसी कारणवश उसका ध्यान केन्द्रित नहीं था।"

(ग) कुमाऊँनी बोली का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

कुमाऊँनी बोली पहाड़ी हिन्दी उपभाषा की बोली है, जिसका क्षेत्र हिमाचल के कुमाऊ जिले के आस-पास के क्षेत्र है।

पहाड़ी हिन्दी उपभाषा वर्ग से संबंधित होने के कारण इस बोली में आरंभ में अनार्य तत्वों की अधिकता थी किन्तु मध्यकाल में ब्रजभाषा तथा राजस्थानी का प्रयोग बढ़ने से आर्य तत्वों की प्रधानता हो गई।

पहाड़ी हिन्दी की अन्य बोली गढ़वाली से इसकी विशेषताएँ मिलती है। जैसे यह बोली गढ़वाली की भाँति ओकारान्त है; जो राजस्थानी का प्रभाव दर्शाता है।
जैसे- हुबको, तारो आदि।

कुमाऊँनी मे एकवचन को बहुवचन में परिवर्तित करने के लिए 'अन' का प्रयोग किया जाता है। जैसे- घोड़ा > घोड़न

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कुमाऊँनी बोली में कारक व्यवस्था में कर्ता कारक के लिए ले, लै आदि तथा कर्म कारक के लिए ते, थैं आदि का प्रयोग किया जाता है।

कुमाऊँनी बोली में सर्वनाम व्यवस्था का स्पष्ट प्रयोग नहीं मिलता है किन्तु ब्रजभाषा का प्रभाव होने के कारण म्हैं, मुंज, हौं आदि का प्रयोग दिखाई देता है।

कुमाऊँनी बोली की शब्द तथा व्याकरण संरचना निम्न उदाहरण द्वारा द्रष्टव्य है -

" बरखा लगी बसरणा
ठंडु ए दा जोर।
थर-थर धुटै कापणी
कि करछा कमजोर ? "

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) दिनकर की कृति उर्वशी का प्रतिपाद्य

द्विवेदी युग में एक नवीन प्रवृत्ति का विकास हुआ, जिसमें इतिहास द्वारा विस्मृत नारी पात्रों को उभारकर महत्व प्रकट किया गया।

दिनकर ने उसी परम्परा को जारी रखते हुये 'उर्वशी' की रचना की।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) भूमंडलीकरण और हिंदी उपन्यास

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भूमंडलीकरण की प्रक्रिया केवल आर्थिक सामाजिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रही बल्कि इसने साहित्यिक क्षेत्र में भी व्यापक परिवर्तन किये।

हिन्दी उपन्यास पर भूमंडलीकरण का प्रभाव प्रमुख रूप से विषयवस्तु के स्तर पर देखने को मिलता है। भूमंडलीकरण ने किस तरह समाज, अर्थव्यवस्था, राजनीति को प्रभावित किया यह सब उपन्यास की विषयवस्तु के रूप में प्रस्तुत किया।

भूमंडलीकरण ने सामाजिक व्यवस्था को अन्दर तक प्रभावित किया तथा वर्गों को संवेदनशील वर्ग बना दिया। ईंधन तथा रेहन पर रग्घू इसी विषयवस्तु पर आधारित उपन्यास है।

राजनीति तथा अपराध का गठजोड़ तथा राजनीति एवं मीडिया के गठजोड़

Copyright – Drishti The Vision Foundation

को प्रदर्शित करने के लिए 'ब्रेक के बाद' उपन्यास की रचना की गई।

साम्प्रदायिकता की उभरती समस्या को प्रकट करने के लिए गीतांजली श्री ने हमारा शहर उस बरस, कमलेश्वर ने कितने पाकिस्तान जैसे उपन्यासों की रचना की।

भूमंडलीकरण के अर्थव्यवस्था पर पड़े प्रभावों को भी उपन्यास की विषयवस्तु के रूप में चुना गया। भूमंडलीकरण ने भारतीय जनजातीय क्षेत्रों को भी उपन्यासधारा में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि विषयवस्तु के विस्तार में भूमंडलीकरण की भूमिका महत्वपूर्ण है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी गद्य के विकास में बालकृष्ण भट्ट का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'हिन्दी प्रदीप' पत्र के सम्पादक 'बालकृष्ण भट्ट' का हिन्दी गद्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने गद्य विधाओं निबंध, नाटक, उपन्यास आदि के द्वारा हिन्दी गद्य को विकसित करने में भूमिका निभाई।

सबसे प्रमुख योगदान के रूप में बालकृष्ण भट्ट के निबंध है। उन्हे हिन्दी का एडीसन कहा जाता है। उन्होंने चारु चरित्र, एक अद्भुत स्वप्न, साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है जैसे निबंधो की रचना की।

हिन्दी नाटक के क्षेत्र में भी उनका योगदान महत्वपूर्ण है। उन्होंने रेल टिकट, जैसे प्रसिद्ध नाटक की रचना की।

हिन्दी आलोचना में भी बालकृष्ण भट्ट का योगदान महत्वपूर्ण है। उन्होंने हिन्दी की पहली आलोचना 'एक सच्ची

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

समालोचना (स्वयंवर नाटक) का प्रकाशन किया।

हिन्दी गद्य के क्षेत्र में उनकी भूमिका इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि भारतेन्दु युग में जहाँ पद्य को महत्व दिया जा रहा था बालकृष्ण भट्ट ने खड़ी बोली का प्रयोग करते हुये हिन्दी गद्य को नई दिशा प्रदान की।

भाषा के संदर्भ में उनके विचार थे कि 'भाषा को शुद्ध करना उसे संस्कृत करने के समान है।' उनके गद्य साहित्य में यही मिश्रित भाषा प्रयुक्त होती है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि बालकृष्ण भट्ट भारतेन्दु युग में गद्य साहित्य के विकास में अकेले महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे थे।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) रामचंद्रिका की संवाद-योजना

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

केशवदास द्वारा रचित रामचन्द्रिका की विशेषता उसकी संवाद योजना ही है। केशवदास ने अपनी विशिष्टता का परिचय रामचन्द्रिका के संवादों को जीवन्तता प्रदान करने में किया।

जिन छोटे। चुस्त तथा गतिशील संवादों को किसी रचना की श्रेष्ठता का आधार माना जाता है, रामचन्द्रिका में वह आद्यन्त उपस्थित है।

केशवदास ने संवादों में गागर में सागर प्रयुक्त करते हुये एक ही संवाद मे तीन-चार संवादों का समावेश किया है। जैसे-

" मातु, कहाँ नृपतात, गये सुरलोकहि,
कहो, सुत शोक तपे।"

उक्त संवाद में दशरथ की मृत्यु, राम का वनगमन एक ही पंक्ति में प्रयुक्त हो गये है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

केशव के संवादों की सहजता स्पष्ट करते हुये आचार्य शुक्ल ने कहा है कि-

"केशव की सबसे बड़ी सफलता उनके संवादों में है। उनका रावण- अंगद संवाद तुलसी से बेहतर है।

जैसे- "राम को काम कहा, रिपु जीतहि।
कौन कहै रिपु जीत्यौ कहाँ।"

नाटकों में जो नाटकीयता अभिनय से प्राप्त की जाती है, केशवदास ने अपने संवादों के माध्यम से ऐसा ही किया है।

सारांशतः कहा जा सकता है कि केशव की संवाद योजना उनकी प्रसिद्धि का आधार है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) कहानी का रंगमंच

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्वतंत्रता के पश्चात् हिन्दी रंगमंच में नवीन तकनीकों का समावेश होने से हिन्दी की कई विधाओं का प्रदर्शन किया जाना संभव हुआ। इसमें कहानी का रंगमंच एक बड़ी उपलब्धि है।

वस्तुतः नई कहानी आन्दोलन के पश्चात् कहानी में भी नाटकीयता के तत्वों का समावेश होने से उनका का भी मंचन संभव हो सका।

कहानी के रंगमंच का आरंभिक प्रयास ~~कमलेश्वर~~ नई कहानी आन्दोलन की तीन कहानियों के एक साथ मंचन से किया गया।

वर्तमान में कहानी का रंगमंच एक व्यापक स्वरूप धारण कर चुका है। नवीन तकनीकी के विकास ने हिन्दी कहानी का मंचन अपेक्षाकृत आसान कर दिया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हिन्दी कहानी के रंगमंच ने रंगमंच को नवीन दिशा प्रदान की। नाटकों की गिरती लोकप्रियता के समय कहानी का मंचन रंगमंच को पुनर्जीवन दे सकता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groundrishti...

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

छायावादी कवि रीतिकालीन अंग-अंग नग्न मांसलता से दूर होकर नारी के सौंदर्य को मांसलता बोध से मुक्त करता है। [illegible] [illegible] है।

छायावादी कवि नारी स्पर्श को इतनी पवित्रता के साथ प्रकट करता है कि वह स्नान के समान पवित्र हो जाती है-

" तुम्हारे छूने में था प्राण।
संग में पावन स्नान।"

छायावादी कवि ने प्रकृति के सौंदर्य को प्रकट करते हुये उस रूप को भी प्रकट किया है, जो द्विवेदी युग में उपस्थित नहीं था।

वस्तुतः शुक्ल जी ने कविता क्या है निबंध में मानवेतर प्रकृति को कविता में शामिल करने को कहा था, उसकी पूर्ण

प्रस्तुत किया।

आंचलिक उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता उसमें अंचल का नायकत्व [illegible] है। [illegible]

[illegible]

आंचलिक उपन्यास की एक अन्य विशेषता किसी भी पूर्वाग्रह से दूर रहते हुए अंचल का वास्तविक यथार्थ प्रस्तुत करना होता है।

[illegible] आंचलिक भाषा ही आंचलिक उपन्यास की विशेषता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

[illegible] केशवदास के काव्यकर्म का परीक्षण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रस्तुत किया।

केशवदास रीतिकाल के रीतिबद्ध [illegible] के प्रमुख कवि हैं, जिनकी कृति का आधार उनकी रामचन्द्रिका है।

केशवदास ने रामचन्द्रिका में अपनी [illegible] के रूप में मौलिकता का [illegible] किया है। इन्होंने संवाद योजना [illegible]

जैसे- "भ्रातु कहाँ नृपनाथ, गये सुरलोकहि, सुत शोक लये।"

[illegible]

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) छायावादी कविता की 'सौंदर्य-चेतना' पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

छायावाद में सत्यम्, शिवम् तथा सुन्दरम् की अवधारणा को प्रकट करने का प्रयास किया है, जिसमें सौंदर्य को महत्ता प्रदान की गई है क्योंकि यह 'सत्य तथा शिव से युक्त है।

छायावादी कवि मानव को प्रकृति की सबसे बड़ी कृति मानता है तथा उसी की सुन्दरता को वर्णित करते हुये कहता है-

"सुन्दर है सुमन, विहग सुन्दर,
मानव तुम सबसे सुन्दरतम्।"

छायावादी कवि नारी सौंदर्य को रीतिकालीन देहमूलक दृष्टि से नहीं देखता बल्कि वह नारी के सौंदर्य को आंतरिक रूप में प्रकट करता है। जैसे-

"हृदय की अनुकृति बाह्य उदार,
एक लंबी काया उन्मुक्त।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अभिव्यक्ति छायावाद में दिखाई देती है। छायावादी कवि प्रकृति को मानव का दर्जा प्रदान करता है।

" मेघमय आसमान से उतर रही।
संध्या सुन्दर परी सी।
धीरे, धीरे, धीरे... ।"

छायावादी कविता की सबसे महत्वपूर्ण विशिष्टता उनके द्वारा प्रकृति का कोमलकांत वर्णन है। कई स्थानों पर छायावादी कवि का प्रकृति के प्रति आकर्षण इतना अधिक विस्तृत है कि वह नारी सौंदर्य से भी अधिक महत्व धारण कर लेता है -

" छोड़ द्रुमों की शीतल छाया
प्रकृति से भी तोड़ माया।
बाले तेरे बाल जाल में
कैसे उलझा दूँ लोचन ।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी की आंचलिक उपन्यासधारा पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास लेखन में हिन्दी में एक नवीन धारा का विकास हुआ, जिसका संबंध आंचलिक उपन्यास से था।

वस्तुतः आंचलिक उपन्यास किसी अंचल विशेष को केन्द्र में लिखे गये उपन्यास से संबंधित है। फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा 'मैला आँचल' की रचना के बाद इस उपन्यासधारा के प्रतिमान तय हुये।

रेणु से पूर्व भी 'देहाती दुनिया' जैसे आंचलिक उपन्यासों की रचना हो गई थी किन्तु उनमें आंचलिकता का बोध भले ही हो पर वे आंचलिक उपन्यास के रूप में अपनी पहचान दर्ज नहीं करा सके।

रेणु ने 'मैला आँचल' की रचना के द्वारा आंचलिक उपन्यास को सशक्त रूप में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आंचलिक उपन्यास की एक बड़ी सीमा उसकी भाषायी आंचलिकता ही है। अन्य क्षेत्रों तक उसकी पहुंच को सीमित करती है। रेणु के अन्य आँचलिक उपन्यासों में परती परिकथा' प्रमुख है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि आंचलिक उपन्यास किसी अंचल के सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक वर्णन के साथ भौगोलिक एवं सांस्कृतिक वर्णन को भी प्रकट करते है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

केशवदास की मौलिकता उनके द्वारा प्रस्तुत कहानी में भी उपस्थित है। उन्होंने वाल्मिकी तथा तुलसी की परम्परा, जिसमें राम के वनवासी जीवन को प्रमुखता दी है के स्थान पर राम के राजसी जीवन को भी बराबर महत्व दिया है।

केशवदास की मौलिकता का दर्शन उनके विचारों में भी दिखाई देती है। उन्होंने इहलोक ~~से~~ के प्रति आग्रह तथा परलोक के प्रति दुराग्रह से बचते हुये ज्ञान, भक्ति को समान महत्व दिया।

केशव की मौलिकता के संदर्भ में अज्ञेय ने कहा है कि "बिहारी की प्रसिद्धि का कारण है कि ~~~~ उन्हें बना बनाया ट्रेडिशन मिला। जबकि केशव ने उस ट्रेडिशन की नींव रखी।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

इस प्रकार स्पष्ट है कि केशव के काव्यकर्म में विषयवस्तु तथा शिल्प दोनों स्तरों पर मौलिकता का समावेश हुआ है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias